ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 43 | कुल पृष्ठ-8 | 2 से 8 दिसम्बर, 2021 | दयानन्दाब्द 198 | सृष्टि सम्वत् 1960853122 | सम्वत् 2078 | मा.कृ.-13

नवशील धाम, कल्याणपुर, कानपुर (उत्तर प्रदेश) में तीन दिवसीय पर्यावरण शुद्धि एवं वेद कथा कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

युवाओं को संस्कारित करने व वेदों से जोड़ने की आवश्यकता है

– स्वामी आर्यवेश

देश की आजादी में आर्य समाज का योगदान सर्वाधिक रहा है

– स्वामी आदित्यवेश

नये आर्य समाज भवन की रखी गई आधारशिला

नवशील धाम फेस–2, कल्याणपुर, कानपुर (उत्तर प्रदेश) में तीन दिवसीय पर्यावरण शुद्धि महायज्ञ एवं वेद कथा का कार्यक्रम धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान मुख्य आकर्षण का केन्द्र आर्य समाज के नए भवन की आधारशिला रखना रहा। कार्यक्रम में प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ, भजन व प्रवचन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी लक्ष्मणानन्द जी गुरुकुल एटा, भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के महामंत्री श्री कैलाश कर्मठ जी कोलकाता, भजनोपदेशक श्री विनोद दधीचि जी सहारनपुर, ढोलक वादक श्री धर्मेन्द्र, श्री संतोष आर्य प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कानपुर नगर, ब्र. शिव स्वरूप गुरुकुल एटा, कई गुरुकुलों के आचार्य, प्रोफेसर, पूर्व कमिश्नर तथा अनेकानेक उच्च पदों पर आसीन विभूतियाँ कार्यक्रम में सम्मिलित रहीं।

इस अवसर पर अपने ओजस्वी उद्बोधन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वैदिक संस्कृति किसी वर्ग विशेष या स्थान विशेष के लिए नहीं बल्कि प्राणी मात्र के लिये है। वर्तमान समय में युवाओं को संस्कार और संस्कृति का पाठ पढ़ाना अत्यन्त आवश्यक हो चुका है। अंग्रेजों द्वारा हमारे देश को प्रदान की गई लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली द्वारा बच्चों को संस्कारित नहीं किया जा सकता। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा में संस्कारों को शामिल करना चाहिए तभी नवयुवकों को सुसंस्कारित बनाया जा सकता है। आज की युवा पीढ़ी को यदि शिक्षा के नाम पर सिर्फ अक्षर ज्ञान ही दिया जाता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब देश का युवा पश्चिमी सभ्यता में सराबोर न हो जाये। यदि समाज को संस्कारित करना है तथा राष्ट्र का निर्माण करना है तो विशेष रूप से शिक्षा को अपनी भारतीय संस्कृति, इतिहास व प्राचीन गौरव से जोड़ना होगा। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना होगा। प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में जंगलों में एकान्त स्थान पर नगरों के कोलाहल से दूर रमणीक विद्याध्ययन केन्द्रों में ज्ञानार्जन होता था जहाँ अन्य विषयों के साथ–साथ वेदों का ज्ञान दिया जाता था तथा छात्रों के चरित्र को भी सुधारकर उनमें चारित्रिक ज्ञान कूट–कूट कर भरा जाता था और जीवन को संस्कारित करते हुए बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जाता था गुरुकुलों से निकले छात्र बड़े होकर वैदिक विद्वान, राष्ट्रभक्त, योद्धा, महापुरुष बनते थे और देश व विदेश में परिवार व राष्ट्र का नाम ऊँचा करते थे। उनका जीवन सत्य पथानुगामी होता था। परोपकार उनका धर्म होता था, वह सदा मानवता के लिए जीते थे, अधर्म से दूर रहते थे। मर्यादा पुरुषोत्त श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण, स्वामी दयानन्द तथा ऐसे कई अन्य महापुरुष हुए हैं जो अपनी महानता के कारण संसार में प्रसिद्ध हुए। इसलिए प्राथमिकता के आधार पर हमें बच्चों को संस्कारित करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि वेद सृष्टि का संविधान है। मानव निर्माण से लेकर सृष्टि के संचालन का पूरा ज्ञान वेद में है आज युवाओं को सही दिशा देने व वेदों से जोड़ने की आवश्यकता है।

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आध्यात्मिकता से परिपूर्ण जीवन जीने के आठ सूत्र

– हरिकृष्ण आर्य

1. **संन्ध्या उपासना** :– आध्यात्मिक जीवन से अभिप्राय है कि अपने आत्मा व परमात्मा पर पूर्ण विश्वास रखते हुए अपना जीवन चलाना। मैं जड़ शरीर नहीं हूँ, मैं चेतन आत्मा हूँ, जिसने अपने बचपन को भी देखा, युवावस्था को भी और वृद्धावस्था भी देख रहा है। यह जड़ शरीर तो एक दिन जला दिया जायेगा परन्तु मैं नहीं समाप्त होऊँगा, अपनी अगली यात्रा पर निकल जाऊँगा। ऐसा विचार कर जीवन में आत्मा को मुख्य और शरीर व मन को गौण समझकर आचरण करना और परमपिता परमात्मा को दोनों का अधिष्ठाता व नियंत्रक मानकर जीवन जीना आध्यात्मिक जीवन है। परमात्मा मेरा पिता व मैं उसका पुत्र हूँ। अमृतपुत्र। हर क्षेत्र में मेरा वह पिता मुझसे अधिक हितैषी है। अतः मैं हर समय उस परमपिता को याद रखूं और प्रातः सायं तो विशेष रूप से संन्ध्या, वन्दन, उपासना, आराधना, उसका स्मरण भजन करूं। सदा अपनी आत्मा की आवाज को सुनूं और मानूं, अपनी मनमानी न करूं। इस प्रकार का आध्यात्मिक जीवन जीने से आत्मिक आनन्द व आत्मिक उन्नति प्राप्त होगी।

2. **सरलता व सादगी** :– सादगी सदाचार की जननी है और श्रृंगार व्यभिचार का दूत। जीवन में सदा सादगी और उत्तम विचारों को अपनाते हुए उच्च आदर्शों को प्राप्त किया जा सकता है, अन्यथा नहीं। सादा रहन–सहन से जीवन में सात्विकता, पवित्रता, धार्मिकता का उदय होता है। सादा खानपान से तन व मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। सरलता जीवन में सदाचार व सद्व्यवहार को जन्म देती है। इसके विपरीत फैशन संसार की तड़क–भड़क, दिखावट, बनावट, झूठा अभिमान, अहंकार, असत्य व विलासिता को जीवन के अंग बना देता है। फैशन मनुष्य को व्यभिचार दुराचार भ्रष्टाचार व अत्याचार की ओर ले जाता है। झूठे ठाठ–बाट, 'खाओ पीयो मौज करो' वाली असभ्यता में पलने वाले लोग जीवन में कभी उच्चादर्शों को प्राप्त नहीं कर सकते, वे तो मनुष्य के सामान्य स्तर से भी गिर जाते हैं। आजकल की पश्चिमी बयार के चलते तो स्त्रियाँ ही क्या पुरुष भी इस फैशनरूपी दानव के पंजे में फंसते जा रहे हैं और अनैतिकता व चरित्रहीनता के गर्त में गिरते जा रहे हैं। अतः जीवन में आध्यात्मिकता, सुख शांति और आनन्द के लिए सादा रहन–सहन, सादा खानपान, सद्व्यवहार व सदाचार अति आवश्यक है।

3. **सत्याचरण** :– मन, वचन व कर्म से सत्य का पालन करना आध्यात्मिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। सब काम सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए तथा सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा तत्पर रहना चाहिए। सत्याचरण ही धर्म का मूल है जिस पर संसार का सारा व्यापार व व्यवहार टिका हुआ है। सत्य मार्ग पर चलकर ही हम उस सत्य स्वरूप, सर्वाधार, सर्वेश्वर को जान सकते हैं, किसी असत्य, प्रपंच या धोखे या अंधविश्वास के द्वारा नहीं। आरम्भ में तो असत्य, ठगी या धोखे से भी सफलता मिलती दिखाई देती है, परन्तु यह सफलता क्षणिक और अवास्तविक होती है। असत्य पर आधारित जीवन चलाने वाले लोग एक दिन जीवन की बाजी हार जाते हैं। सत्याचरण से मनुष्य का अन्तःकरण शुद्ध व पवित्र हो जाता है और शुद्ध व पवित्र अंतःकरण ही परमपवित्र प्रभु का निवास स्थल है। अतः सत्य प्रकाश स्वरूप परमात्मा सत्याचरण करने वालों का ही सहायक होता है, अन्यों का नहीं। परमेश्वर पूर्णतः सत्य है।

4. **सकारात्मक दृष्टिकोण** :– सकारात्मक दृष्टिकोण से तात्पर्य है – जीवन में सदा शुभ कल्याणकारी संकल्प विकल्प, शुभ विचार व शुभ भावी भावनाएं बनाए रखना। आत्मा व परमात्मा में दृढ़ विश्वासी होना ही सकारात्मक जीवन दृष्टि है। परमात्मा ही सारे जगत् का उत्पत्तिकर्ता, कर्ता धर्ता व संहर्ता है। वह अत्यन्त मंगलरूप व कल्याणकारी है। वह जो कुछ करता है, सब शुभ ही करता है। वह हम जीवात्माओं का परम हितकारक है। अतः हम नकारात्मक व अशुभ विचारों को महत्त्वहीन, निराधार व निरर्थक समझकर सदा छोड़ दें। नकारात्मक दृष्टि वाले लोग नास्तिक, विभिन्न आशंकाओं से ग्रस्त, भयभीत, आलसी व प्रमादी होकर दुःख भोगते हैं। ऐसे लोग विद्वानों व महात्माओं में भी दोष ढूंढ़ते रहते हैं और उनके सद्गुणों से भी वंचित रह जाते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण वाला मनुष्य सदा आशावान बना रहता है। ईश्वर कृपा से सब शुभ होगा, अच्छा ही होगा, ऐसा विचार जीवन के हर क्षेत्र में बना रहता है और वह निर्भय निःशंक, उत्साही व पुरुषार्थी होकर हर कार्य में सफलता प्राप्त करता है। जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण आध्यात्मिक उन्नति के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण गुण है।

5. **समता व समानता** :– परमेश्वर के न्याय नियम अनुसार मनुष्य जीवन में सुख वा दुःख दोनों ही आते

रहते हैं। कभी–कभी लगता है जीवन में दुःख अधिक है, सुख कम, परन्तु यह सत्य नहीं। आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए यह आवश्यक है कि हम सुख–दुःख, हर्ष–शोक, मान–अपमान, हानि–लाभ में समता का भाव रखें और द्वन्द्वों के प्रभाव से ऊपर उठें। जब जीवन में सुख आवें तो हम नाचें नहीं और जब दुःख आवें तो रोएं नहीं। यही समता का भाव है। दोनों अवस्थाओं में समान विचार रखना समतायोग कहलाता है। जितना हम अपने सुख को खींचकर लंबा कर देंगे, हमारा दुःख भी खिंचकर उतना ही लंबा हो जायेगा। अतः अतिवाद से सदा बचो। सुख आवे तो प्रभु का धन्यवाद करो और दुःख आवे तो प्रभु को याद करो, उससे सहनशक्ति व सामर्थ्य के लिए प्रार्थना करो। यही आध्यात्मिक जीवन का लक्षण है। जीवन में समता का अभ्यास एक बड़ा तप है, जिसका परिणाम सदा सुखद व अनुकरणीय है। ऐसा करने से मनुष्य बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी विचलित नहीं होता।

6. **संतोष सुख** :– संतोष जीवन का सबसे बड़ा धन है जो मनुष्य को सुख व आनन्द की प्राप्ति कराता है। संतोषी परमसुखी होता है और असंतोषी परम निर्धन। इस जीवन में मुझे जो कुछ भी मिला है, उस प्रभु की कृपा से मिला है। जितना भी प्रभु ने दिया है, मेरे लिए पर्याप्त है। प्रभु ने मुझे जीवन में बहुत कुछ दिया है और दिये जा रहे हैं। मैं इसके लिए उसका बार–बार धन्यवाद करता हूँ। ऐसा विचार जीवन में सदा बनाये रखें। तृष्णा का त्याग ही संतोष है। 'और और' की हाय–हाय मनुष्य को मृत्युपर्यन्त दुःखी रखती है। एक इच्छा के पूरा होने पर दूसरी इच्छा तीव्र गति से सिर उठाकर सामने आ खड़ी होती है और मनुष्य इन इच्छाओं के जाल से कभी निकल नहीं पाता और सदा दुःख सागर में ही गोते खाता–खाता इस संसार से विदा हो जाता है। जो मनुष्य अपनी इच्छाओं और अनावश्यकताओं पर अंकुश नहीं लगा पाता तथा संयम और समझदारी से काम नहीं लेता वह अन्ततः झूठ, भ्रष्टाचार, लूटपाट, चोरी डकैती पर उतारू हो जाता है। तृष्णा ही अनेकानेक बुराईयों, दुर्गुणों, दुर्व्यसनों व दुःखों की माँ है। आध्यात्मिक जीवन जीने वाला मनुष्य इस तृष्णा को संतोषरूपी कुल्हाड़ी से काटकर नष्ट कर देता है। वह अपने लिए आगे सुख का मार्ग प्रशस्त कर लेता है।

7. **स्वाध्याय** :– स्व का अर्थ है अपना और अध्याय का अर्थ है – अध्ययन। इस प्रकार स्वाध्याय का अर्थ हुआ – अपने आपको पढ़ना व जानना या पहचानना। कैसे जानें? आत्मा व परमात्मा का बोध कराने वाली विद्या को पढ़ें। वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना, सुनना–सुनाना और उसके अनुसार आचरण करना स्वाध्याय कहलाता है। संसार में सभी मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि कर सुख व आनन्द को भोगना चाहते हैं। इनकी प्राप्ति का सत्यज्ञान वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि सद्ग्रंथों के अध्ययन से ही मिलता है। इनमें परमात्मा, जीव और प्रकृति का शुद्ध ज्ञान भरा पड़ा है। अकेलेपन और दुःख की घड़ियों में एक स्वाध्याय ही मनुष्य का सच्चा साथ निभाता है। परमपिता परमात्मा ओ३म् का जप, भजन, चिन्तन, मनन व गुरुमंत्र गायत्री, महामृत्युंजय मंत्र व ईश्वरस्तुति प्रार्थना उपासना आदि आदि मंत्रों की अर्थ विचार सहित पुनरावृत्ति भी स्वाध्याय के अन्तर्गत ही आता हैं। स्वाध्यायशील मनुष्य का सम्बन्ध अपने उपास्य, आराध्य व इष्टदेव से शीघ्र जुड़ जाता है और उसके दोष, दुर्गुण व भ्रम दूर होकर शीघ्र अपने ध्येय पर पहुँच जाता है। निरन्तर व नियमित स्वाध्याय आध्यात्मिक जीवन की आधारशिला है जो मनुष्य को सत्यज्ञान और ज्ञान सहित भक्ति के द्वारा ईश्वर प्राप्ति की ओर अग्रसर व उत्साहित करता है। वेद का आदेश व निर्देश है कि साधक जन स्वाध्याय में कभी आलस्य व प्रमाद न करें और सदा स्वाध्याय को नित्यकर्म की भांति निभाएं।

8. **सत्संगति** :– स्वाध्याय की भांति ही सत्संगति सत्पुरुषों का संग भी आध्यात्मिक उन्नति के लिए परम आवश्यक है। वैदिक सत्संगों उत्सवों व शिविर आदि में दूर–दूर से विद्वान् लोग आते हैं, उनके उपदेश व प्रवचन सुनने से ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान व अनुभव थोड़े समय में ही उपलब्ध हो जाता है। उनका जीवन सात्विकता, धार्मिकता व आध्यात्मिकता का एक उदाहरण होता है, जो साधक के लिए आदर्श का काम करता है। सत्संगति और परस्पर विचार–विमर्श से कई आशंकाएं, भांतियाँ और गलत धारणाएं दूर हो जाती हैं। अतः वैदिक विचार वाले आर्य सज्जन विद्वान् व स्वाध्यायशील साधक यदि आपसे थोड़ा दूर भी रहते हों, तो परस्पर नियमित सत्संगति दोनों के लिए अतिलाभदायक है। ईश्वर भक्ति, स्तुति प्रार्थना आदि के भजन नियमित रूप से सुनना सुनाना भी सत्संगति ही है। इससे साधना का निरन्तर प्रवाह साधक के जीवन में बना रहता है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे हमें शक्ति सामर्थ्य व सद्बुद्धि दें जिससे कि हम अपने जीवन में ईश्वर उपासना, सरलता व सादगी, सत्याचरण, समता, सकारात्मक दृष्टिकोण, संतोष, स्वाध्याय व सत्संगति को अपनाएं और एक आदर्श आध्यात्मिक जीवन जीने में सफल हो सकें।

आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयोगिता

– श्रीमती डॉ. कमल आनन्द

संस्कृत और संस्कार संस्कृति के संघटक हैं। किसी भी देश या राष्ट्र की जनभावना और जीवनक्रम के सुव्यवस्थित व सुरचित स्वरूप को उस राष्ट्र की संस्कृति कहते हैं। मनस्वी साहित्यकारों ने, चिन्तकों ने, राजनीतिज्ञों ने संस्कृति की विभिन्न परिभाषाएं दी हैं। श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा - मन और आत्मा की विशालता और व्यापकता को संस्कृति कहते हैं। काका कालेलकर संस्कृति को समाज की आत्मा मानते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार संस्कृति मनुष्य की विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति है। अतः संस्कृति उस क्रिया समूह का नाम है जिसके द्वारा विभिन्न व्यक्ति मानवजाति के सृजनात्मक जीवन में भाग लेते और उसे समृद्ध करते हैं। सच्ची संस्कृति तो मस्तिष्क, हृदय और हाथ का अनुशासन है और यह अनुशासन भारतीय संस्कृति की पहचान रही है। हमारी संस्कृति संस्कृत से ही सम्भूत और पल्लवित हो कर जी रही है। कर्मनिष्ठा, विश्वबन्धुता, समन्वय आदि जीवनदायी तत्वों की संवाहिका संस्कृत भाषा है। आज इस वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयुक्तता और भी बढ़कर सामने आ रही है क्योंकि इसी के कारण हमारी संस्कृति इतिहास के अनेक विकट झंझावातों में जूझने के बाद भी अपने स्वत्व को अक्षुण्ण रखने में समर्थ रही है। संस्कृत जीवन प्रक्रिया की थाती है, गौरव है। मानवता के संरक्षण, परिवर्धन और परिष्कार के लिए जीवन की पाथेयभूता यह संस्कृत भाषा ही है।

आधुनिक वैश्वीकरण के युग में भी प्रोफेसर कार्डोना ने संस्कृत को डंहपबंस भाषा कहा है और इसके अध्ययन को आनन्द। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में संस्कृत की उपयुक्तता वर्णित है :-

निकला जहाँ से आधुनिक यह भिन्न भाषा तत्व है,
रखती न भाषा एक भी संस्कृत समान महत्त्व है।
पाणिनि सदृश वैय्याकरण संसार भर में कौन है?
इस प्रश्न का सर्वत्र उत्तर उत्तरोत्तर मौन है।।

विश्व संस्कृति के समग्र अध्ययन हेतु संस्कृत को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। इसमें हमारे जीवन दर्शन और चिन्तन के अक्षय स्रोत सुरक्षित हैं। यह विश्व की संजीविनी शक्ति है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः जैसी उदार परिकल्पना इसी का अवदान है।

वैश्वीकरण ने यन्त्र, संचार तथा अस्त्र-शस्त्रों के उत्पादन में विकास की ऊँचाइयों को छू लिया है परन्तु संस्कृति के क्षेत्र में हम पिछड़ गये हैं। शान्ति स्थापना में यू. एन. ओ. के प्रयास पर्याप्त सफल रहे हैं, परन्तु हम युद्ध और आतंक को समाप्त नहीं कर पाये। संचार व्यवस्था ने विश्व को एक छोटी इकाई में परिवर्तित कर, मानव को एक दूसरे के बहुत समीप कर दिया है। जल, स्थल और अन्तरिक्ष की दूरियाँ समाप्त प्राय हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को एक नया अर्थ प्रदान किया जा रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में पूरा विश्व एक परिवार है। केवल वाह्य परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं की दृष्टि से नहीं। आज की स्थिति में यह वसुधा मात्र कुटुम्ब है जहाँ सामीप्य तो है सान्निध्य नहीं। सम्मिलन तो है, संवेदन नहीं। इस वैश्वीकरण का मानव सुखी परिवार की नींव, संविभाग, सान्निध्य, कुशल माङ्गल्य आदि से अनभिज्ञ है। उसे इन सब गुणों के पुनः परिभाषण की आवश्यकता है जिसमें संस्कृत की विशिष्ट भूमिका है।

संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित उसका विश्वबन्धुत्व कहीं खो गया है। भौतिकता ने उसे ग्रस लिया है और स्वार्थ परायणता का दंश उसे डस गया है। उसे उपनिषदों के 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' तथा 'मा गृधः कस्यस्विद् धनम्' के ऐक्यबोध की आवश्यकता है। संस्कृत एकता और समग्रता के स्वर भरती है सम्पूर्ण सांस्कृतिक जीवन की केन्द्रबिन्दु है। वर्तमान वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत साहित्य गति कराने वाला ऐसा मार्ग है जहाँ न कोई भटकन है और न कोई उलझन। इसका बहुक्षेत्रीय ज्ञान मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करने में सक्षम है। इसके कल्याण सम्पादक गुण 'बहुजनसुखाय' 'बहुजनहिताय' विश्वहित साधक है। ''संस्कृत साहित्य वह उच्च गिरिशृंङ्ग है जिस पर चढ़कर मनुष्य काल के सुदीर्घ स्रोत को बड़ी दूर तक देख सकता है।

आधुनिक वैश्वीकरण में पनपते, कलह-क्लेश, वैमनस्य और अशान्ति से व्याकुल मानव को शुभ संकल्प और सत्कर्म की आवश्यकता है। 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु का स्वरघोष ही उसे स्वस्थ परिवेश में सांस लेने योग्य बना सकता है। आधुनिक विज्ञान की प्रगति विध्वंसक न हो, इसीलिए उपनिषत्स्वरलहरी 'असतो मा सद्गमय', 'तमसो मा ज्योतिर्गमय', आज भी सामाजिकों का पथ प्रशस्त करती है। आज विपरीत आचरण करने से जड़ीभूत मन में संवेदनशीलता का प्रादुर्भाव करने वाले मूलमन्त्र 'मातृदेवौ भव', 'पितृदेवोभव' धर्मं चर, सत्यं वद आदि संस्कृति के भव्यरूप को संचारित करने में सर्वथा समर्थ हैं। वस्तुतः जगत हमारी चेतना का एक प्रक्षेपण ही तो है। वैदिक सिद्धान्तों की छत्रछाया में जिस अनुपात में हम अपने को सुधारेंगे, संसार उसी अनुपात में अधिकाधिक अच्छा बनता चला जायेगा। आवश्यकता चेतना की है, आवश्यकता एकता की है, आवश्यकता समन्वय की है। हमें कुछ तो बदलना होगा, अकेली गूंज से हटकर सहगान बनाना होगा, अन्धेरे से हटकर सूरज बन चमकना होगा, अवरोधों को खण्डित कर शीतल ब्यार बन बहना होगा। दुश्चरित से बचने और सच्चरित में संलग्न होने की वैदिक प्रार्थनायें 'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आ सुव' 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे' आज के वैश्वीकरण की अनिवार्यता है और यह संस्कृत साहित्य में ही निहित है।

भौतिकता की होड़ में हांफता मानव आज विश्वास, ईमानदारी, परिश्रम और सच्चाई से उठ सा गया है। अनैतिक साधनों से अपने उद्देश्य की पूर्ति उसकी आदत बन गई है। वैश्वीकरण के इस दौर में आदमी इन्सान बन जाये तो बहुत बड़ी बात है। एक शायर के शब्द याद आ रहे हैं :

क्या नजर लग गई जमाने को
कि अब कोई आँख नम नहीं होती।
टोकते सब हैं लड़खड़ाने को
कोई बैसाखियाँ नहीं बनता।।

पतन की ओर धंसते परिवेश में यह अनिवार्य हो गया है कि आज के पाठ्यक्रमों में संस्कृति की मूलभित्ति संस्कृत को अनिवार्य बनाया जाये। भर्तृहरि के नीतिवचन, वेदों की उदारता, सहकर्मिता, सहचिन्तन, उपनिषदों का संतुलन और गीता की स्थिरप्रज्ञता शिक्षण के अनिवार्य अंग होने चाहिए। व्यक्तिगत स्तर पर सांस्कृतिक मूल्यों के आधान से पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वस्थ परिवेश बन पायेगा। एक नई दिशा मिलेगी। आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और आत्मशक्ति प्राप्त होगी। अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बनाये रखने में यह अनिवार्य है कि आज की सन्तान को संस्कृत से परिचित कराया जाये। संस्कृत जीवन विधि भी है और जीवन निधि भी। टी. वी. में दिखाये जाने वाले अधिकांश सीरियल संस्कृति को पछाड़ रहे हैं। 'राहुल दुल्हनिया ले जायेगा' सीरियल की लाखों के वस्त्राभूषणों से सजी दुल्हनें तो यह भी नहीं जानती कि रामायण और महाभारत के रचनाकार कौन हैं? कोई परशुराम कहती है तो कोई हनुमान। हिन्दू विवाह संस्कार के विविध कृत्य पाणिग्रहण, लाजाहोम, सप्तपदी आदि के वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधार को वे क्या जानेंगी?

आज विवाह विधि को छोड़ रहा है और आडम्बरों का शिकार होता जा रहा है। सप्तपदी के अतिशय महत्त्व का परिचायक सप्तपदीनं सख्यम् एक व्यापक लोक व्यवहार है। सख्य में सर्वदा समानता का भाव रहता है। इसमें गौरव का भी भाव रहता है श्थ्वतहमज 'दक वितहपअमश् का भाव समरसता बनाये रखता है। पत्नी के प्रति इस प्रकार के उदात्तभाव संस्कृत की ही देन हैं। अधिकार और स्वतंत्रता के आधुनिक संघर्ष ने इस सख्यभाव को नष्ट प्राय सा कर दिया है। एकात्मकता के अभाव में दाम्पत्य क्षीण होकर सामाजिक समझौता मात्र रह गया है। वैदिक वैवाहिक मंत्रों से विदित होता है कि गार्हपत्य का यथावत् पालन अभ्युदय और निःश्रेयस का साधक माना जाता था। यह दाम्पत्य सम्बन्ध केवल शारीरिक भोगवादी सम्बन्ध नहीं अपितु वैचारिक और हार्दिक सम्बन्ध भी है जिससे सुगठित परिवार के माध्यम से सौहार्द्रपूर्ण समाज का निर्माण होता है।

आदर्शमय जीवन था तब पति पत्नी का
धन्य जिससे वेद का युग हो गया।
गृहस्थ का वो दिव्यतम कर्त्तव्य पथ
प्रेम और विश्वास में ही खो गया।।

इसी प्रेम, विश्वास और एकता में दम्पत्ती पुत्र-पुत्रियों, नाती-पोतों से खेलते हुए अपने ही घर संसार में आनन्दित होकर सारी आयु बिता देने की कामना करते हैं। सुमङ्गली, कल्याणदायिनी वधू को आशीर्वाद दिया जाता था कि पति के घर जाकर गृहस्वामिनी, बनकर दीर्घायु भोगे। वधू पति की सहधर्मिणी और जीवन-संगिनी के पद पर सुशोभित थी। सबको अपने स्नेह से अभिसिंचित करती सभी का स्नेहभाजन बन उनके हृदयों में सम्राज्ञी बन विराजती थी। परिवार के संयुक्त जीने की पद्धति में स्नेह था, त्याग था और पवित्रता का विशुद्ध वातावरण था, जो आज कहीं देखने को नहीं मिलता। आज की अस्त-व्यस्त और मस्त जीवन पद्धति में विवाह का यह शुद्ध-बुद्ध स्वरूप कहीं खो गया है। वैश्वीकरण के इस परिवेश में क्ष्छह्र. कंनइसम प्दबवउम छव ङ्गपके नामक नई धारणा पनप रही है। अनेकत्व में एकत्व, समग्र जीवन का सानुपातिक विकास, व्यक्ति एवं समष्टि का सामंजस्य, अध्यात्मोन्मुखी जीवनदृष्टि आदि विशेषताएं समाज कल्याण की कसौटी रही हैं। इन उन्नायक तत्वों के अभाव में आज के समाज की नींव चरमरा गई है। आज की नारी जिस स्थिति के लिए प्रयत्नशील है उसकी परिपूर्ण कल्पना संस्कृत साहित्य में उपलब्ध है। वेदों की नारी सभी कार्य करने में समर्थ समाज के हर क्षेत्र में स्थान बनाने वाली एक विश्वस्त और आश्वस्त नारी है।

मातृभूमि व राष्ट्रभावना के सन्दर्भ में भी संस्कृत की उपयुक्तता प्रमाणित है। राष्ट्रैक्य और राष्ट्र सुरक्षा एक सामाजिक कर्त्तव्य हुआ करता था जहाँ वर-वधू को अपने राष्ट्र की समृद्धि करते हुए ही अपनी समृद्धि करते रहने का आशीर्वाद दिया जाता था। राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय समृद्धि का निर्मल भाव आज के वैश्वीकरण की आवश्यकता है। मन, चित्त और संकल्पों में समानता होने और तदर्थ प्रयत्न करने के उपदेश के साथ-साथ सभा-समितियों में भी सुसंवाद, परस्पर सुसंगति, समानता बनाये रखना, मिलकर चलना, मिलकर बोलना, सौमनस्य बनाये रखने का स्वर गुंजन सामाजिक कल्याण के सुर भरता है।

पहले पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्रविड़, उत्कल, बंग में बंटे भारत को पनुः मेघालय, नागालैण्ड, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड में बंटते हुए देश के लिए समग्र राष्ट्र को अपने घर के समान समझने, सुविधा और अभ्यासानुसार भाषा प्रयोग की स्वतंत्रता देने वाले उस वैदिक चिन्तन की आवश्यकता है जहाँ सब के संगठित होने तथा आपस में कोई द्वेषभाव न रखने की प्रार्थनाएँ नित्य-प्रति की सपर्या हुआ करती थीं। कामना करती हूँ कि इस वैश्वीकरण में राष्ट्रीयधर्म हमारे नेताओं को सद्विचार प्रदान करें ताकि भाषा व जातिभेद से ऊपर उठकर सर्वत्र एकात्मभाव के स्वर गूंज पायें।

राष्ट्रीय वैश्वीकरण के इस युग में आज पुनः उसी मधुर चिन्तन की, परिवारों के उल्लास व सौहार्द की आदर और आदर्श मिश्रित स्नेहिल परिवेश की आवश्यकता है।

दहेज के लोभ में वधुओं को जलाने वाले तथा कन्या-भ्रूण हत्या करने वाले परिवारों को यह बोध अनिवार्य है कि हमारी वैदिक संस्कृति में नारी पुरुष की सहयोगिनी और सहभागिनी थी। वह सम्राज्ञी बन अपने अधिकार और कर्त्तव्यों को निष्ठा से निभाती, आत्मविकास के पथ पर अग्रसर हो नागरिकता के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए सांस्कृतिक विकास द्वारा समाजसेवा में योगदान देती थी न कि कन्या-भ्रूण हत्या की पात्र बनती थी।

वैश्वीकरण के इस युग में यदि युवाओं को वैदिक जीवन पद्धति का बोध कराया जाये तो आज का सिसकता दाम्पत्य एक सुन्दर, सुवासित दाम्पत्यभाव का आनन्द ले सकेगा। कहीं कोई परिवार नहीं टूटेगा, कोई शिशु माँ-बाप से नहीं बिछुड़ेगा, कहीं कोई कन्या-भ्रूण हत्या न होगी और कहीं कोई युवती यौतुक दहन में नहीं झुलसेगी। पति-पत्नी समरस हो कर एक उज्ज्वल स्वस्थ परिवेश दे पायेंगे।

हमारा सांस्कृतिक न्यास संस्कृत भाषा में ही विन्यस्त है। हमारे समस्त धार्मिक व सांस्कृतिक कृत्य संस्कृत में ही सम्पन्न हैं। अतः संस्कृत से मन, वाणी और क्रिया को सुसंस्कृत

शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 1 का शेष

नवशील धम, कल्याणपुर, कानपुर (उत्तर प्रदेश) में तीन दिवसीय पर्यावरण शुद्धि एवं वेद कथा कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

मिशन आर्यावर्त के निदेशक तथा आर्य समाज कोविड रिलीफ अभियान के राष्ट्रीय संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आज पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। हमें गर्व है कि आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द के अनुयायियों का देश की आजादी में सर्वाधिक योगदान रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानंद आदि आर्य समाज की पृष्ठभूमि के रहे हैं।

शनिवार सायंकाल युवाओं का सम्मेलन हुआ जिसमें कर्मठ युवाओं को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा दण्ड एवं ओ३म् ध्वज दे करके उनका उत्साहवर्धन किया गया तथा नवशील धाम में आर्य समाज का शिलान्यास स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से किया गया। कार्यक्रम में सम्मलित होने वाले सभी नए लोगों को सत्यार्थ प्रकाश भी भेंट किया गया। इस आर्य समाज के नए भवन के लिए जमीन श्री संतोष आर्य व उनकी धर्मपत्नी ने अपनी ओर से दानस्वरूप देकर समाज के लिए अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक श्री सुखबीर शास्त्री पुरोहित एवं धर्माचार्य अंधेरी आर्य समाज (मुंबई) रहे तथा संचालन व यज्ञ सम्पन्न कराने का कार्य श्री विनोद कुमार आर्य ने किया। कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा 30 नवम्बर, 2021 (मंगलवार) को विश्ववारा कन्या गुरुकुल, रुड़की, रोहतक (हरियाणा) में वस्त्र वितरण समारोह सफलता पूर्वक संपन्न

सामाजिक क्षेत्र में ख्याति प्राप्त अपने स्थापनाकाल से ही समाज सेवा के कार्यों में अहर्निश संलग्न मानव सेवा प्रतिष्ठान संगठन ने परम याज्ञिक परोपकारी श्रीमान वीरसेन मुखी जी कीर्तिनगर, दिल्ली (वर्तमान में अमेरिका) निवासी के सौजन्य से तप, त्याग की प्रतिमूर्ति वैदिक विदुषी डॉ. सुकामा जी प्राचार्या द्वारा स्थापित एवं संचालित विश्ववारा कन्या गुरुकुल, रुड़की, रोहतक (हरियाणा) में दिनांक 30 नवम्बर, 2021 (मंगलवार) को मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री, उपमंत्री श्रीमती कमलेश कुमारी व कार्यकर्ता प्रधान श्री रामपाल शास्त्री मन्त्री विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की द्वारा गुरूकुल की 160 ब्रह्मचारिणियों (छात्राओं) को गर्म वस्त्र ट्रैकशूट, आदरणीया डॉ. सुकामा जी के सानिध्य में वितरित किये गये।

मानव सेवा प्रतिष्ठान संगठन द्वारा इस प्रकार के सामाजिक कार्य समय–समय पर आयोजित किये जाते रहते हैं, उसी कड़ी में यह वस्त्र वितरण का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की, रोहतक में वस्त्र वितरण का कार्यक्रम अत्यन्त सराहनीय रहा। मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारियों का धन्यवाद करते हुए आचार्या डॉ. सुकामा जी ने अपने उद्बोधन में सभी छात्राओं को आशीर्वाद प्रदान किया। मानव सेवा प्रतिष्ठान के अधिकारियों ने भी गुरुकुल की उन्नति हेतु शुभकामनाएँ देते हुए इसी प्रकार से भविष्य में भी सहयोग प्रदान करते रहने का आश्वासन दिया।

– डॉ. कवर सिंह,
महामन्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद, बिजनौर (उ. प्र.) का रजत जयन्ती समारोह सम्पन्न

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के साथ संस्कारों की भी आवश्यकता है

– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली है

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

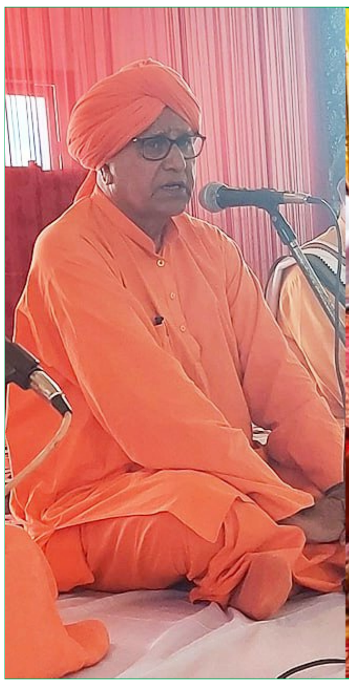

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, बिजनौर (उ. प्र.) की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 29, 30 व 31 अक्टूबर, 2021 की तिथियों में गुरुकुल 'रजत जयन्ती समारोह' भव्यता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी कर्मवीर जी, डॉ. सुद्युम्नाचार्य जी, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री जी, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी, डॉ. सुरेन्द्र शर्मा जी ज्वालापुर, आचार्या सूर्या देवी जी चतुर्वेदा, आचार्य धनंजय जी, स्वामी वेदामृतानन्द जी, आचार्य प्रदीप जी गुरुकुल देवली, सोनीपत सहित अनेकों विद्वान एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

प्रथम सत्र में नव प्रविष्ट पांच बालिकाओं ने सम्पूर्ण आर्योद्देश्य रत्न माला की प्रस्तुति की। ब्र. प्रवीता इसकी प्रस्तोती थी। इस प्रस्तुति ने सभी श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया। इस सत्र की अध्यक्षता हमारे दादा गुरु श्री पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी के सुयोग्य शिष्य राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विद्वान् आदरणीय डॉ. सुद्युम्ना जी ने की। उन्होंने वेदों से अनेक वैज्ञानिक तथ्यों का दिग्दर्शन अपने अध्यक्षीय भाषण में कराया।

द्वितीय सत्र का प्रारम्भ करते हुए आचार्या जी ने बताया कि पिछले चार महीने से गुरुकुल की यज्ञशाला में महर्षि जी के बनाए हुए अनुपम ग्रन्थ व्यवहारभानु का अध्यापन आचार्य रामचन्द्र आर्य जी द्वारा चल रहा है जिसमें सभी छात्राएँ रुचिपूर्वक भाग ले रही हैं। आचार्या जी ने बताया कि जितनी भी सत्यविद्या है और जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव हैं सभी तो व्यवहारभानु हैं। उन्होंने बताया कि व्यक्ति की छोटी से छोटी भूल समाज एवं राष्ट्र के सम्बन्धों में दरार उत्पन्न कर देती है। इसलिए व्यवहारभानु नामक पुस्तक सब आर्यों को पढ़ना चाहिए। गुरुकुल की बालिकाओं को व्यवहारभानु के ज्ञान दिये जाते हैं। 15 नव प्रविष्ट बालिकाओं ने व्यवहारभानु में से 15 विषय लेकर भाषणों की एक श्रृंखला इस समारोह के अवसर पर प्रस्तुत की है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि इस गुरुकुल ने इन स्वर्णिम 25 वर्षों में कन्याओं को महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुरूप शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने का बहुत ही प्रशंसनीय एवं सराहनीय कार्य किया है। किसी

भी संस्था की सफलता उसके कुशल प्रबन्धन, संचालन एवं सुयोग्य मार्ग दर्शन पर निर्भर करती है। इस गुरुकुल को ब्रह्मवादिनी विदुषी बहन आचार्या डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती जी का कुशल संरक्षण एवं आचार्यत्व निरन्तर प्राप्त हो रहा है जिसके परिणामस्वरूप अनेकों योग्य विदुषी स्नातिकाएँ यहाँ से शिक्षा प्राप्त करके विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करते हुए अपनी प्रतिभा एवं योग्यता का परिचय दे रही हैं। विगत 25 वर्षों के कार्यकाल में इस गुरुकुल ने आर्ष शिक्षा के क्षेत्र में जो उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं तथा छात्राओं के निर्माण का जो रचनात्मक कार्य किया है वह अपने आपमें विशेष सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो सकता है। यह गुरुकुल निरन्तर महर्षि दयानन्द जी के स्वप्नों को साकार करने में लगा हुआ है।

गुरुकुल के रजत जयन्ती के अवसर पर दिल्ली से पधारे अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने गुरुकुल की आचार्या जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि डॉ. प्रियंवदा वेदभारती जी ने इस गुरुकुल को प्राणपण से सींचा है और गुरुकुल में पढ़ रही बालिकाओं को उच्च शिक्षा से संस्कारित करके उन्हें योग्य बनाया है। गुरुकुल शिक्षा के माध्यम से ही छात्र-छात्राओं को उच्चकोटि की वैदिक शिक्षा प्रदान करके उन्हें विद्वान/विदुषी बनाया जा सकता है। मुझे इस गुरुकुल की गतिविधियों को देखकर बहुत ही प्रसन्नता हो रही है कि यह गुरुकुल अपने कार्यकाल के 25 वर्ष पूर्ण करके अपना रजत जयन्ती समारोह मना रहा है।

महर्षि पतंजलि अन्तर्राष्ट्रीय योग विद्यापीठ पुरकाजी के संस्थापक पूज्य स्वामी कर्मवीर जी ने कहा कि जो बालक-बालिका पाणिनि मुनि के उपदेश पंचक को याद कर सकते हैं और उनको आचार्य के मुख से काशिका और महाभाष्य पढ़कर समझ सकते हैं। वह प्रकाण्ड विद्वानों की श्रेणी में आ जाते हैं।

राष्ट्रपति से सम्मानित डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री जी ने संस्कृत भाषा में व्यंग एवं हास्य कविताओं के माध्यम से लोगों को खूब हंसाया। शास्त्री जी ने संस्कृत भाषा की कविताओं को इतनी सरलता के साथ प्रस्तुत किया जिसे संस्कृत न समझने वाले लोग भी बड़ी ही आसानी से समझ गये। हास्य कविताएँ विशेष चर्चा का विषय रहीं।

30 अक्टूबर, 2021 को एक समावर्तन संस्कार सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें 6 ब्रह्मचारिणियों का समावर्तन संस्कार भी हुआ। इसमें स्वामी वेदामृतानन्द जी का आशीर्वाद ब्रह्मचारिणियों को मिला। आचार्या जी ने कहा कि राजा भोज का समराङ्गण सूत्रधर भारद्वाज मुनि कृत 'यन्त्र सर्वस्वं' के कई अध्याय महर्षि सुश्रुत का तकनीकी शास्त्र आदि अनेक वैज्ञानिक एवं तकनीकी ग्रन्थ आपके शोध एवं पुनरुद्धार की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

कन्याओं द्वारा संस्कृत में शिवराज विजय नाटक प्रस्तुत किया गया। संस्कृत नाटक की निर्मात्री एवं निर्देशिका आचार्या ऋतम्भरा शास्त्री जी रहीं। नाटिका अत्यन्त सरल सुबोध संस्कृत भाषा में प्रस्तुत की गई। रजत जयन्ती कार्यक्रम के अन्तिम दिन 'धर्मान्तरण और हम' विषय पर भी एक सशक्त वार्ता प्रस्तुत की गई।

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर एक भव्य स्मारिका का भी विमोचन किया गया। गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, बिजनौर (उ. प्र.) का रजत जयन्ती समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

पंच महायज्ञ करने से स्वर्ग प्राप्त होता है

– खुशहाल चन्द्र आर्य

हमारे त्यागी, तपस्वी, विद्वान्, ऋषि मुनियों ने हर व्यक्ति को विशेष कर गृहस्थी को पांच महायज्ञ नित्य सुचारू रूप से करने का आदेश दिया है। इन पांच महायज्ञों से अनेकों लाभ तो है ही, पर विशेष लाभ यह है कि ये पांचों यज्ञ पांच किस्म के दुःखों व कष्टों को दूर करने वाले भी हैं। यानि इन यज्ञों से दुःखों व कष्टों का निराकरण होता है। वे पांच महायज्ञ हैं – (1) ब्रह्मयज्ञ (2) देवयज्ञ (3) पितृयज्ञ (4) बलिवैश्व देवयज्ञ (5) अतिथियज्ञ और कष्ट है आत्मिक, शारीरिक, पारिवारिक, प्राकृतिक तथा अज्ञान से बढ़ती दूरियाँ। पांच यज्ञों से पांच कष्ट कैसे दूर होते हैं, उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ देते हैं।

1- cã ;K %& ब्रह्मयज्ञ, आत्मा के दुःखों व कष्टों का निवारण करके, आनन्द की अनुभूति करवाता है। ब्रह्मयज्ञ का तात्पर्य है सन्ध्योपासना करना तथा वेद आदि धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना। मनुष्य को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नित्य प्रातः व सायं करनी चाहिए। इससे आत्मा में आये विकार यानि ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, हिंसा आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और उनकी जगह प्रेम, दया, करुणा, परोपकार की भावना व आनन्द का संचार होता है। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थनोपासना का तात्पर्य है कि हम किसी एक शान्त व स्वच्छ स्थान पर मनको सब ओर से हटाकर, एकाग्र चित्त से अपनी दृष्टि को बाहर से हटाकर अन्दर डालकर पहले तो हम ईश्वर की स्तुति यानि प्रशंसा करें कि हे ईश्वर! आप कितने सामर्थ्यवान् हो और किस प्रकार सृष्टि की रचना करके उसका संचालन व संहार भी आप ही करते हो और जीवों को उनके किये अच्छे व बुरे कर्मों का फल भी आप ही अपनी न्याय व्यवस्था से किस प्रकार देते हो यह ध्यान देना चाहिए। फिर अपने पूर्ण सामर्थ्य के बाद जो काम नहीं बनता हो उसकी सफलता पाने के लिए और अधिक सामर्थ्य पाने की ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। फिर उसके पास बैठ कर अपने अवगुणों व दोषों का ध्यान करना चाहिए और ईश्वर के गुणों का स्मरण करते हुए अपने दोषों को छोड़ना और ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य ब्रह्मयज्ञ से अपने दुर्गुणों को छोड़ता है और ईश्वर के गुण दया, करूणा व परोपकार की भावना से जुड़ता हुआ अपने जीवन को पवित्र बनाता है। ब्रह्मयज्ञ में सन्ध्योपासना के साथ–साथ वेदों तथा धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना भी आता है जिससे मनुष्य अपने ज्ञान को बढ़ाता है और वेदों के अनुसार चल कर मोक्ष की तरफ अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, जिसको पाने के लिए जीव अच्छे कर्म करते हुए मनुष्य योनि में आता है।

2- no ;K %& यह महायज्ञ मनुष्य के शरीर से सम्बन्ध रखता है। देवयज्ञ का तात्पर्य है, हवन करके सब जड़ देवों को प्रसन्न करना होता है। विश्व में पांच जड़ देवता है, जिनके नाम हैं, जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश। इन पांचों जड़ देवताओं का अग्नि मुख है। जिस प्रकार हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मुख से भोजन करते हैं और उस भोजन का पेट में जाकर रस, रक्त आदि बनकर पूरे शरीर में जाता है और पूरे शरीर की कमियों की पूर्ति करता है, तब मनुष्य स्वस्थ रह पाता है। यही काम यज्ञ का है। वह भी अग्नि में जो घृत, सामग्री व समिधा आदि डाली जाती है। उसके गुण अग्नि में डालने से हजार गुणा बढ़ जाते है और वह सुगन्ध जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी व आकाश में फैल कर सबको सुगन्धित कर देती है जिससे सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र हो जाता है। ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है जो जीव के लिए लाभदायक है। हाईड्रोजन व नाईट्रोजन गैस कम हो जाती है जिससे मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है यानि शरीर में जो रोग व बीमारियाँ रहती हैं, वे दूर जाती हैं और शरीर स्वस्थ हो जाने से मनुष्य का जीवन सुखी व आनन्दित बन जाता है। इस प्रकार देवयज्ञ से शरीर के कष्ट दूर हो जाते हैं।

3- fir` ;K %& पितृयज्ञ से परिवार व गृहस्थ सुखी बनता है। जिस घर में पितर जनों का आदर व सम्मान होगा तथा उनकी सभी आवश्यकताएँ पूर्ण होगी तो उनके आशीर्वाद और उनके अनुभवों का लाभ उस परिवार को मिलेगा जिससे वह परिवार भी सुखी बना रहेगा। हमारे पौराणिक भाई मरे हुओं का श्राद्ध व तर्पण करते हैं, परन्तु वेद हमें मरे हुए पितरों का श्राद्ध व तर्पण करना नहीं सिखाता बल्कि जीवित माता–पिता व वृद्धजनों की श्रद्धापूर्वक सेवा, सुश्रूषा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न रखना सिखाता है। जिसको श्राद्ध कहते हैं। अपने स्वभाव व व्यवहार से बड़ों के मन को तृप्त रखना ही तर्पण कहलाता है जो जीवितों का ही कर पाना सम्भव है। मरने के बाद करना एक अन्धविश्वास ही है।

4- cfyoS'ons ;K %& इस यज्ञ से सब जीवों को प्रसन्न रखना है। जो भूखा है उसको भोजन देना, जो प्यासा है उसको जल देना। जो असहाय है उसकी सहायता करना। जो जीव हम पर आश्रित है उसकी रक्षा करना ही बलिवैश्व देवयज्ञ है। इस यज्ञ में जीव हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जब सब जीव प्रसन्न रहेंगे तो प्रकृति भी शान्त रहेगी उसमें किसी प्रकार का प्रकोप नहीं होगा और सब जगह शान्ति बनी रहेगी।

5- vfrfFk ;K %& घरों में अज्ञानता से जो वैमनस्य बना रहता है, आपस में वैरभाव रहता है और परस्पर लड़ते–झगड़ते रहते हैं, अतिथि यज्ञ से ये सब समाप्त हो जाते हैं। अतिथि यज्ञ का तात्पर्य यह है कि गृहस्थियों के घर पर साधु, सन्त, संन्यासी, विद्वान्, वानप्रस्थी व गुरुकुलों के आचार्यों व ब्रह्मचारियों का आना–जाना बना रहना। जिस गृहस्थ में संन्यासी, वानप्रस्थी व विद्वानों का आदर सत्कार होगा, उनके घरों में प्रवचन होंगे, उपदेश होंगे तो उस घर में परस्पर का विरोध व कटुता कभी भी नहीं रहेगी, कारण परस्पर का विरोध व कटुता अज्ञान से उत्पन्न होती है। जब संन्यासियों और विद्वानों के सद्उपदेश जिस घर में होंगे उस घर से अज्ञानता दूर हो जायेगी और परस्पर का प्रेम व सहृदयता का वातावरण बन जायेगा, तब पति–पत्नी, सास–बहू, भाई–भाई का झगड़ा कभी नहीं होगा और वह घर परस्पर के शुद्ध व्यवहार से स्वर्ग के समान बन जायेगा। इस प्रकार इन पांच महायज्ञों से ऊपर लिखे इन पांच दुःखों व कष्टों की निवृत्ति होती है। इसलिए हर व्यक्ति को विशेष कर हर गृहस्थी को अपना जीवन व गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए ये पांच महायज्ञ अवश्य करने चाहिए।

इस लेख को लिखने के भाव मेरे मन में तब जगे जब आर्य समाज बड़ा बाजार का वेद सप्ताह यानि श्रावणी उपाक्रम जो 23 से 29 अगस्त, 2015 तक मनाया गया था। उसी के प्रथम दिन प्रातः के सत्र में पूज्य आचार्य ब्रह्मदत्त जी का प्रवचन इसी विषय पर हुआ था। वह प्रवचन मुझे बहुत ही अच्छा लगा, इसलिए इसका लाभ अन्य विज्ञ पाठकजन भी उठा सकें। इस भावना से प्रेरित होकर मैंने यह लेख लिखा है। आशा है इसका अधिक से अधिक लाभ पाठकगण उठायेंगे।

– द्वारा गोविन्द राम आर्य एण्ड संस
180, महात्मा गांधी रोड, (2 तल्ला),
कोलकाता–700007, मो.:–9830135794

जिन्दगी को भुन भुनाते हुए नहीं, गुन गुनाते हुए जियो

– आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

अध्यात्म पथ पत्रिका के तत्वावधान में निरन्तर देश देशान्तर में वेद का डंका बजाते हुए 239वां वैबिनार गीत संगीत के साथ अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के 'उल्लासमय जीवन जीने की कला' विषय पर दिया गया उद्बोधन बहुत रूचिकर व प्रेरणादायी रहा। अंतर्राष्ट्रीय कथाकार आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने ऑनलाइन समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि मुस्कुराकर जियेंगे या मुरझाकर जियेंगे ये आपके ऊपर निर्भर है। उल्लासमय जीवन के लिए ज्ञान, बल, उत्तम स्वास्थ्य, उत्तम धन एवं वाणी की मधुरता की अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि जीभ में लगी चोट ठीक हो सकती है परन्तु जीभ से लगी चोट कभी ठीक नहीं हो सकती। युधिष्ठिर के स्नेहपूर्ण और मधुर भाषण का प्रभाव द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, भीष्म पर पड़ा। युद्ध से पहले युधिष्ठिर ने भीष्म, द्रोण आदि के चरणस्पर्श कर आशीर्वाद लिया। सेना के बीच खड़े होकर युधिष्ठिर ने ऊंचे स्वर से पुकार करके कहा – जो हमें ठीक मार्ग पर समझ कर हमसे मिलने की इच्छा रखता हो उसे मैं गले लगाने को तैयार हूं। दुर्योधन का भाई युयुत्सु युधिष्ठिर के इस मधुर व्यवहार को देखकर और मुग्ध होकर धर्मराज कुंती पुत्र को बोला – मैं आपकी ओर से कौरवों से लड़ने को तैयार हूं यदि आप मुझे अपना सकें। दुर्योधन का सहोदर भाई युयुत्सु महाभारत युद्ध के अंत तक पांडवों के साथ अपने सगे भाइयों से लड़ता रहा। यह प्रभाव मधुर भाषण और न्यायपूर्ण व्यवहार का होता है।

न किसी को नाराज करके जियो, न किसी से नाराज होकर जियो, जिंदगी बस कुछ पलों की मेहमान है, सबको खुश रखो और सबसे खुश होकर जियो।

अंत में प्रख्यात प्रवचनकार आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने जीवन जीने के बहुत ही उपयोगी 9 सूत्रों पर प्रकाश डाला जिनको धारण कर हम उत्तम जीवन जी सकते हैं।

ये उपयोगी सूत्र हैं–

ताली बजाओ – रोग भगाओ।
तलवा घिसिये – चेहरा चमकाइये।
हथेली मलिए – ऊर्जा जगाइये।
नाखून रगडिये – बुढ़ापा भगाइये।
खुलकर हंसिये – सुस्ती भगाइये।
सुबह टहलिए – दिनभर चार्ज रहिए।
दस मिनट दौड़िए – बीमारी का मुंह मोड़िए।
कीजिए रोज डांस – रोगों को नहीं मिलेगा चांस।
सुनिए संगीत – मन होगा पुलकित।

इन जीवन जीने के नौ सूत्रों के साथ–साथ आचार्य जी ने परमात्मा की डायरी के तीन पेज पर भी बहुत सुन्दर भजन व आख्यानों के द्वारा प्रकाश डाला। बुद्धि की पवित्रता, वाणी पर संयम की बहुत रूचिकर महाभारत आदि के आख्यानों के द्वारा विवेचना की। ये श्रृंखला 6 प्रवचनों में चलेगी। ऐसी सरस, उपयोगी प्रवचन माला का लाभ आप आचार्य जी के कुशल संयोजन में प्रत्येक मंगलवार व शनिवार सायं 5 बजे होने वाले गूगल मीट पर कार्यक्रम में जुड़कर लाभ उठायें। आचार्य जी 50 पुस्तकों के लेखक अनेकानेक भाषाओं में अनुवाद करवा कर अधिकाधिक जनों को लाभान्वित करने वाले तथा यज्ञ के बड़े–बड़े आयोजन कर देश–विदेश के लोगों को लाभान्वित कर रहे हैं। शीघ्र ही एक और कार्यक्रम की घोषणा होने वाली है जिसमें 50 देशों को जोड़ने का लक्ष्य है। ऐसे बहुपयोगी कार्यक्रमों का लाभ अवश्य उठायें।

आचार्य जी ने श्री नरेन्द्र आर्य सुमन, श्रीमती कविता आर्या जी, स्वर्णा सेतिया, संजय जी व आचार्या श्रद्धांजली एवं अग्रिमा जी से सुशोभित टीम के माध्यम से भजनों की सरिता बहा रखी है साथ ही देश विदेश के अन्य भाई बहन भी उत्साह पूर्वक अपने भजनों की प्रस्तुति देकर सभी को लाभान्वित करते हैं। आचार्य जी के श्रम को नमन है।

यदि आजमाएँ तो जीवन स्वर्ग बन जाए?

– वैद्य राजेन्द्र साह

1. यदि आप अपने माता-पिता का आदर करेंगे तो आपके बच्चे भी आपका आदर करना सीखेंगे।

2. दूसरे मनुष्यों से जैसा व्यवहार आप अपने लिए पसन्द करते हैं वैसा ही व्यहार यदि आप दूसरों के साथ करें तो आपका जीवन बदलकर स्वर्ग बन सकता है। सामने वाले के स्थान पर अपने को रखकर जरा सोचने की आदत डालें कि यदि "मैं उसकी जगह होता तो क्या करता?" तो बहुत सी विकट समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा और साथ ही अनावश्यक तनाव से मुक्ति भी मिलेगी।

3. किसी को भी बिना मांगे और अनावश्यक सलाह देने और बात-बात पर टोकने की आदत त्याग दें। इस तरीके से किसी व्यक्ति, चाहे बच्चा हो या बड़ा, में सुधार लाने की आशा करना व्यर्थ है। जीवन में सुधार लाने के लिए प्रकृति, सत्संगति, महापुरुषों का जीवन और श्रेष्ठ लेखकों की प्रेरणादायक पुस्तकें ही वास्तविक प्रेरणा स्रोत हैं।

4. जैसा मधुर व्यवहार विवाह से पहले प्रेमी-प्रेमिका के मध्य देखा जाता है, वैसा ही व्यवहार प्रेमी-प्रेमिकावत् व्यवहार, एक-दूसरे को समझने की भावना और परस्पर तालमेल का विवाह के बाद जीवन में किया जाये तो पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन वास्तव में आनन्ददायक बन सकता है। फिर भला दाम्पत्य जीवन में कटुता और क्लेश का स्थान कहाँ?

5. 'क्या खाते हैं' इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना कि खाये हुए आहार को ठीक से पचाना। अतः जो आहार आप ठीक से पचा न सकें उसका सेवन न करें और जो खाद्य पदार्थ आपको अनुकूल न आता हो, उसका सेवन त्याग देना चाहिए। इसी प्रकार क्या कमाते हैं? इससे अधिक महत्त्वपूर्ण है कि आप अपनी आय को विवेक और बुद्धिमता से कितना खर्चते हैं।

6. दूसरों की बढ़ोतरी से अपना मिलान या कम्पेरिजन करके दुःखी मत होइए और न ही व्यर्थ प्रतिस्पर्धा में उतरकर होश खोइए। प्रतिस्पर्धा का कहीं अन्त नहीं है। ईर्ष्या और दूसरों को सुखी देखकर दुःखी होने का स्वभाव मानसिक तनाव और अनेकानेक रोगों का कारण बनता है, जबकि दूसरों को सुखी देखकर आनन्दित होने का मजा अपने आप में किसी स्वर्गिक सुख से कम नहीं है।

अपने जीवन रूपी 'आधी भरी, आधी खाली गिलास' के आधे खाली भाग को देखकर और अपनी उपलब्धियों को नजरअन्दाज करके व्यर्थ में दुःखी मत होइए। 'जो पास नहीं है' उसे देखकर निराश होने की बजाए 'जो पास में है' उसको देखकर आप सदा आशावादिता के साथ खुशियाँ बटोरिए। सदा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाइए। 'जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि'।

इस सृष्टि में सभी समान नहीं हो सकते। यहाँ तक कि एक ही माँ की कोख से उत्पन्न भाई-बहन में भी प्रत्येक का अपना एक अलग व्यक्तित्व है। यह भेद जन्म-जन्मान्तर के शुभाशुभ कर्मों का प्रतिफल है। कर्मवाद सद्कर्मों की प्रेरणा देता है और सप्त-व्यसनों से बचाता है। जैसा कोई कर्म करेगा वैसा ही उसे फल मिलेगा। अच्छे कर्मों के द्वारा इस जीवन और अगले जन्म को निखारना आपके अपने हाथ में है। महाभारत में भगवान् श्रीकृष्ण ने फल की कामना किए बिना, अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दी है :-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'

इस मर्म को समझने के बाद बहुत से मानसिक तनावों से सहज ही मुक्ति मिल जाती है और कर्त्तव्य परायणता का पथ प्रशस्त हो जाता है।

7. 'सादा जीवन, उच्च विचार' के अपनाने से जहाँ आत्मा चमकती है वहाँ फैशनपरस्ती और कुत्सित विचारों से आत्मा मलीन होती है। हमारी संस्कृति आत्मोन्मुखी होने से आत्मा प्रधान है। यहाँ व्यक्ति के चरित्र और गुणों की पूजा होती है शरीर और शरीर पर धारण किए गए वस्त्र आभूषणों या उनके नकल (फैशन) की नहीं।

आवश्यकताओं को कम करने में ही सच्चा सुख छिपा है। चाह घटाने से चिन्ताओं से मुक्ति मिलती है। किसी ने सच कहा है :-

चाह गई, चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिए, वह है शहन्शाह।।

8. सभी धर्म, देवी-देवता, आस्थाएँ, पूजा-पद्धतियों का हमें सम्मान करना चाहिए, क्योंकि ये सब केवल माध्यम अथवा मार्ग हैं- एकमात्र लक्ष्य परमात्मा तक पहुँचने के लिए। जिस प्रकार अनेक नदियों और जल-धाराओं के जल का एकमात्र लक्ष्य आगे जाकर अन्त में विशाल सागर में विलीन होकर उस सागर से एकाकार हो जाना है, उसी प्रकार समस्त धर्म, देवी-देवता, आस्थाएँ और उनसे जुड़ी पूजा-पद्धतियों के उपासक का अन्तिम लक्ष्य भी आगे जाकर अन्त में परमात्मा की प्राप्ति ही है।

'सर्वधर्मसम्मानभाव' इतनी सी बात ठीक से समझकर जीवन में आचरण में लाई जाये तो साम्प्रदायिकता का नामोनिशान न रहेगा और इंसानियत जागेगी जिससे हमारा जीवन स्वर्ग बन जायेगा।

9. किसी भी भारतीय को किसी के आगे नतमस्तक होने की जरूरत नहीं है क्योंकि हमारी संस्कृति महान् है, जो कि श्रीराम, श्रीकृष्ण, ज्ञानी महावीर, महात्मा बुद्ध, गुरुनानक, महर्षि दयानन्द जैसे धर्मनायकों द्वारा स्थापित महान् मानवीय मूल्यों और आदर्शों पर आधारित है। यथा - 'सादा जीवन, उच्च विचार', ब्रह्मचर्य, शाकाहार, सर्वधर्मसम्मानभाव, सभी देवी-देवताओं के प्रति सम्मान, नारी के प्रति सम्मान, माता-पिता बुजुर्गों के प्रति सम्मान, सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा की भावना, क्षमा, करुणा, सत्य, अस्तेय, समन्वयवाद, कर्मवाद, संतोष, दान, शील, तप, त्याग, समर्पण, प्रेम, भाईचारा इत्यादि पर है, जो सर्वधर्म सहिष्णुता, अनेकता में एकता, सह-अस्तित्व, 'जीओ और जीने दो' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सन्देश देती है। आज विरासत में मिली मानवीय मूल्यों की ऊँचाई को छूने वाली इसी संस्कृति के कारण हमारा सिर सदैव ऊँचा रहा है और इसी से हमारा देश महान् है। भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना और उन्हें जीवन में उतारना हमारा परम धर्म है। यह लेख डॉ. अजीत मेहता जी द्वारा लिखित "स्वदेशी चिकित्सा सार" पर आधारित है।

- ग्राम. पो.-सरैया बाजार, वाया-पारू, जिला-मुजफ्फरपुर (बिहार)-843112

पृष्ठ 3 का शेष

आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयोगिता

करना होगा। आज वैश्वीकरण के युग में सभी अनुष्ठान औपचारिकता मात्र रह गये हैं। इनके प्रति शिथिलता और उदासीनता आज का फैशन है। बहुत बड़ी विडम्बना है कि आज का मानव इनकी वैज्ञानिकता से अनभिज्ञ है। इस स्थिति में संस्कृत की उपयुक्तता और भी बढ़ जाती है। हमारे विविध याज्ञिक आग्नेय अनुष्ठान केवल शरीर और मन को ही शुद्ध नहीं करते वे पर्यावरणीय शुद्धि में भी सहायक हैं। इन कृत्यों में किये जाने वाले मन्त्रोच्चारण से प्रसृत स्वर लहरियों से 'Ultra Sonic Waves Treatment' के समान रोगाणुओं को नष्ट करने की सामर्थ्य है। 'सह नाववतु सह नो भुनक्तु सह वीर्य करवावहे' का सहभागित्व ही आज के वैश्वीकरण की पुकार है।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में संस्कृति के नैतिक, सामाजिक, दार्शनिक तथा राष्ट्रीय प्रसंग में संस्कृत की उपयुक्तता पूरे विश्व में है। विश्वशान्ति के लिये 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्', मानव व प्रकृति के सुन्दर, स्वस्थ पर्यावरण के लिए 'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः', राष्ट्रैक्य के लिए 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी', 'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी' आदि निर्देश महत्त्वपूर्ण हैं। संसदभवन में 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय', डाकतार वाहनों पर 'अहर्निशं सेवामहे' जीवन बीमा निगम में 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' शिक्षा संस्थानों में विद्ययाऽमृतमश्नुते "निष्ठा धृतिः सत्यम् तमसो मा ज्योतिर्गमय' आदि सारगर्भित वाक्य आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की सर्वप्रचलित उपयुक्तता को ही प्रमाणित करते हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि संस्कृत एकविषयात्मिक नहीं है। यह विविध विषयों की शृंखला है। यदि आज के पाठ्यक्रम में संस्कृत निबद्ध तत्-तत् अंश विभिन्न विषयों में निर्धारित कर दिये जायें तो भारत का ही नहीं, विश्व का प्रत्येक नागरिक अपने अतीत को अधिक समझ पायेगा, वर्तमान में विशेष सन्तुलित व्यवहार कर पायेगा और अपने भविष्य के प्रति उल्लसित होकर उचित आचरण कर पायेगा। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में यह नितान्त अनिवार्य है कि संस्कृत की विषय शृंखला विविध विषयों से सुसम्बद्ध हो पाये। राजनीति में कौटिल्यशास्त्र की, कानून में मनुस्मृति की, आयुर्वेद में चरक व सुश्रुत संहिता की अनिवार्यता विषयों को तत्वतः जानने में सहायक भी होगी और उपयोगी भी। वाणिज्य व व्यावसायिक प्रबन्धन भी संस्कृत निष्ठा होने पर विशेष सुभग बन सकता है। चेतना, नैतिक मूल्याङ्कन, सदसंकल्प व परिश्रम आज के प्रबन्धन की कड़ियाँ हैं।

उपनिषदों में प्रतिपादित आत्मदर्शन (Introspection) आत्मश्रवण (अपने दोषों को सुनने की सामर्थ्य) और आत्मनिदिध्यासन (Self Analysis) वैश्वीकरण के इस युग में मानव को सद्-दृष्टि देने में सक्षम हैं। आज इसी आत्मदर्शन, आत्मश्रवण और आत्मनिदिध्यासन की आवश्यकता है।

आज की मानवता अलगाव और अकेलेपन की मर्मान्तक पीड़ा से सन्त्रस्त है। संस्कार प्रधान संस्कृति आज की अनिवार्यता है। विनय, आदर, वृद्धसेवा आज की पुकार है। सुसंस्कृत व्यवहार और आचरण जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। यह तथ्य यदि आज की पीढ़ी समझ पाये तो Old Age Homes की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आधुनिक सभ्यता से पीड़ित और उपेक्षित वृद्ध भी अपने-अपने परिवारों में सुखद जीवन बिता सकेंगे और 'पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम्, अदीनाः स्याम् शरदः शतम्' को सार्थक कर पायेंगे।

वैश्वीकरण के युग में संस्कृत की उपयुक्तता इस तथ्य में भी निहित है कि संस्कृतनिष्ठ व्यक्ति किसी भी विकट स्थिति से सहजता से उभर सकता है। गीता की स्थितप्रज्ञता, उपनिषदों का आध्यात्मिक ज्ञान, वेदों का शुभसंकल्प उसे आश्वस्त कर उसकी राहों के दीपस्तम्भ बन उपस्थित होते हैं। सत्यं शिवं सुन्दरं की अजस्र धारा निरन्तर सिंचित करती उसे पल्लवित और विकसित करती हैं।

आशा करती हूँ कि वैश्वीकरण के इस दौर में संस्कृति के सकारात्मक चिन्तन की दीपशिखा निरन्तर जगमगाती रहे। दीप से दीप प्रज्ज्वलित होता रहे, लोक कल्याण की सुरभि चहुँदिक् महकती रहे। मेरा मानना है कि संस्कृत वह चिराग है जो हकीकत है - सच्चाई है। वह रोशनी है जो हमारी मायूसियों से मद्धम हुए चिरागों को रोशन करती है। वह जीवन तत्व है जो हमें भाव, विचार और अभिव्यक्ति का उचित अनुपात सिखाती है। जियो और जीने दो का पाठ पढ़ाती है हमें इस योग्य बना देती है कि हम किसी के फटे लिवास को टांक सकें, किसी के मन की आबरू बन सकें। संस्कृत वस्तुतः अमृत की बूँदें हैं। आब-ए-हयात के कुछ कतरे हैं। संस्कृत वह शाश्वत चिन्तन है जो अहसास कराता है हम कौन थे, हम क्या हैं और क्या होंगे अभी। आज के वैश्वीकरण परिवेश में संस्कृत मानो मानव को कह रही है :-

खुशबू हूँ मैं, फूल नहीं हूँ जो मुरझा जाऊँगी,
ममता का आंचल बन के तुम को लोरी सुनाऊँगी
मेरे गीत सहारा देंगे मीत बन कर सहलाऊँगी
अनदेखा तारा बन करके राह मैं तुम्हें दिखाऊँगी।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दो दिवसीय सत्य सनातन वैदिक धर्म समारोह वैदिक ज्ञान आश्रम, यमुनानगर के संस्थापक स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती के सानिध्य में सफलतापूर्वक संपन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के यमुनानगर पधारने पर केंद्रीय आर्य युवक परिषद् के जिला अध्यक्ष डॉ. सौरभ आर्य ने किया 'आर्य अभिनंदन सम्मान'

वैदिक ज्ञान आश्रम यमुनानगर के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी सच्चिदानंद सरस्वती जी के 80वें जन्मोत्सव के अवसर पर अमन पैलेस यमुनानगर में दो दिवसीय सत्य सनातन वैदिक धर्म समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। स्वामी सचिदानंद जी को उपस्थित आर्यजनों ने शुभकामनाएँ दी। प्रतिदिन कार्यक्रम यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। समारोह में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य नेता एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि एवं मुख्यवक्ता के रूप में पधारे और अपना ओजस्वी उद्बोधन देकर सभी का मार्गदर्शन किया। समारोह में केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय सहमंत्री एवं जिला अध्यक्ष आर्य रत्न डॉ. सौरभ आर्य के नेतृत्व में परिषद् के आर्य पदाधिकारियों ने स्वामी आर्यवेश जी को अंग वस्त्र पहनाकर व आर्य अभिनंदन सम्मान भेंट कर आर्यजनों को सम्मानित किया और यमुनानगर पधारने पर सभी आर्य संस्थाओं की ओर से अभिवादन व्यक्त किया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य वैदिक संस्कृति, सभ्यता व संस्कार सर्वाधिक प्रमाणिक व सर्वश्रेष्ठ जीवन पद्धति है जिससे जुड़ने व जोड़ने के लिए हमें सदा उत्साहित होने के साथ–साथ आर्यजनों को प्रेरित भी करना है तभी हम परिवार, समाज, देश को आदर्श बना सकते हैं। उन्होंने आर्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों से आग्रह करते हुए कहा कि वह संस्थागत रूप से समय–समय पर इस प्रकार के आयोजन अपने परिवारों व संस्थाओं में आयोजित करते रहें ताकि घर–घर में आर्य व वैदिक विचारधारा से जुड़कर सभी अपना मर्यादित जीवन जीने की कला को सीख सके। उन्होंने कहा की आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकारों को देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व सर्वदा स्मरण करते हुए उन्हें नमन करता रहेगा क्योंकि उन्होंने देश ही नहीं दुनिया के लोगों को सत्य को स्वीकार करने, अंधविश्वास, पाखण्ड एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों को जड़ से खत्म करने, वैदिक सिद्धान्तों को अपने आचरण, व्यवहार में धारण करके वास्तविक जीवन जीने की जो मिसाल प्रस्तुत की वह कभी भुलाई नहीं जा सकती। उन्होंने सभी आर्य श्रोताओं का आभार व अभिवादन व्यक्त करते हुए अपना साधुवाद दिया।

इस अवसर पर श्रीमती कविता आर्या ने महर्षि दयानन्द व वैदिक संस्कृति से जुड़े भजन प्रस्तुत करके सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। समारोह में मंच का संचालन नीरज नरूला ने किया।

समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट, मिशन आर्यावर्त के निदेशक तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी, स्थानीय विधायक व मेयर तथा श्री मंगल पांडे की पांचवी पीढ़ी से शीतल पांडे, सुशील भाटिया, मेजर विजय आर्य मोहाली, करनाल आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान प्रो. आनंद सिंह, वरिष्ठ आर्य नेता श्री लाजपत राय चौधरी, सुशील मुनि सहित कई आर्य नेता व विद्वान, रेलवे कॉलोनी आर्य समाज से मोहित आर्य, आर्य समाज राजपुरा, करनाल सहित कई आर्य समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री प्रवीण कुमार, डॉक्टर दिनेश, राजीव दीवान, रमणीक, सुधीर ठाकुर, संजीव नरूला, सन्नी चौधरी, सरदार जगजीत सिंह, धर्मपाल धीमान, सरदार बुद्धा सिंह, श्रीमती अमृत सचदेवा, पूनम सचदेवा, हरबन्त कौर, सुकीर्ति, तारा सैनी, संतोष, सोमा कपूर, सुखबीर साहनी के अतिरिक्त संगरूर, गन्नौर की आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने विशेष भूमिका निभाई।

गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरियाणा) के पूर्व प्रधान एवं कोषाध्यक्ष श्री ताराचन्द आर्य जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

सेठ ताराचन्द्र आर्य जी कर्मठ, लगनशील एवं प्रतिष्ठित आर्य सामाजिक कार्यकर्ता थे – स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरियाणा) के पूर्व प्रधान एवं कोषाध्यक्ष तथा आर्य समाज के प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता श्री ताराचन्द आर्य 'सीसवाला' का दिनांक 18 अक्टूबर, 2021 (सोमवार) को अचानक निधन हो गया है। श्री ताराचन्द जी की स्मृति में दिनांक 29 अक्टूबर, 2021 को मिलेनियम पैलेस, मलिक चौक, हिसार में शोक सभा/रस्म पगड़ी का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि सभा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मिशन आर्यावर्त के निदेकश स्वामी आदित्यवेश जी, चौ. हरिसिंह सैनी पूर्व मंत्री, श्री सतपाल अग्रवाल, श्री दलबीर आर्य, श्री शोभाचन्द आर्य, श्री सतप्रकाश आर्य, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री सत्यकाम, श्री मनीराम आर्य सहित समाज के सैंकड़ो गणमान्य व्यक्ति उपस्थित होकर अपनी–अपनी ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि श्री ताराचन्द जी शालीन व्यक्तित्व के धनी थे। वह आर्य समाज एवं गुरुकुल के कार्यों में प्रारम्भिक काल से ही जुड़े रहे। गुरुकुल कमेटी के प्रधान एवं कोषाध्यक्ष भी रहे। वह स्वयं भी गुरुकुल के लिए सहयोग राशि दान के रूप में प्रदान करके अन्य लोगों को भी सहयोग के लिए प्रेरित करते थे। इस प्रकार से वह गुरुकुल धीरणवास के एक मजबूत स्तम्भ थे। वह अपने जीवनकाल में सदैव समाजसेवा और परोपकारी कार्यों के रूप में आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में अपना सराहनीय योगदान प्रदान करते रहे। मृत्यु से एक दिन पूर्व भी वह गुरुकुल धीरणवास की अन्तरंग बैठक में सम्मिलित हुए थे और बड़े ही प्रसन्न मुद्रा में दिखाई दे रहे थे। ऐसे लगनशील, कर्मठ एवं उदारवादी आर्य समाज के पुरानी पीढ़ी के कार्यकर्ता का अचानक निधन आर्य समाज संगठन की अपूर्णीय क्षति है। स्वामी जी ने कहा कि इस संसार में जो भी आया है उसे जाना ही होता है। इसलिए मनुष्य को हमेशा सद्कार्यों में संलिप्त रहते हुए समाजोपयोगी कार्य में संलग्न रहना चाहिए। हम सबकी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके द्वारा छोड़े गये कार्यों को पूरा करने में अपना योगदान दें। स्व. श्री ताराचन्द जी के तीन सुपुत्रों में सर्वश्री धर्मवीर, यशवीर एवं कर्मवीर भी अपने पिता द्वारा किये जा रहे कार्यों को आगे बढ़ाने में तत्पर रहते हैं। श्रद्धांजलि सभा का संचालन दयानंद ब्रह्म महाविद्यालय हिसार के आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने संभाला।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।